आपके पत्र

संपादक महोदय,

मई जून अंक पढ़ा ।पिछले 4 अंकों से मधुमेह वाणी की उत्कृष्टता का ग्राफ तेजी से बढ़ता जा रहा है। राधिका श्रीवास्तव की इंसूलीन एक महान खोज पढ़कर समझ में आया कि विज्ञान जैसे विषय में राजनीति का गंदा माहौल आज का नहीं अपितु 80–85 वर्ष पूर्व भी मौजूद था और इसकी मार से यूरोप–अमरीका जैसे देश भी अछूते नहीं हैं। लेख में वैज्ञानिकों के फोटो के साथ खोज में साथ दे रही उनकी कुतिया की तस्वीर भी आप लोग ढूँढ़ कर निकाल लाये। वहीं तत्कालिक समाचार पत्रों की कतरनों को प्रकाशित किया गया ।डॉ जिंदल की छिपकली काफी रोचक रही ।यह जानकर प्रसन्नता हुयी कि दवा बनाने में निरीह जीवों को परेशान नहीं करना होगा ।डॉ सुभाष शर्मा की यात्रा संबंधी जानकारी सामयिक एवं उपयोगी है ।डॉ ज्ञान चतुर्वेदी ने इन्सुलीन से आँख चुराने की मानसिकता पर सीख परक व्यंग कसा है जो काफी सराहनीय है ।

हमारी शुभ कामनायें स्वीकार करें ।

डॉ. नीलिमा सिंह
नई दिल्ली

❖ ❖ ❖

संपादक महोदय,

मई–जून का अंक पढ़ा ।छिपकली वाला लेख बड़ा कुतुहल परक था ।वैज्ञानिक विषयों को आमजन को कैसे परोसा जाये इस में आप लोग माहिर सि) हुये हैं ।देखना यह है कि जी.एल.पी–1 का इंजेक्शन मधुमेह रोगियों से सुई का भय भगाने में कहाँ तक कामयाब होगा ।इस अंक में डॉ संजय कुमार का कब्ज़ विषय पर लेख सराहनीय है ।डॉ सुभाष शर्मा ने ''द्धमधुमेहीऋ यात्री कृपया ध्यान दें'' में काफी उपयोगी टिप्स दी हैं ।सचमुच कई बार मेजबान मधुमेह रोगियों को बड़े धर्मसंकट में डाल देते हैं ।ऐसे समय ढीठ बन जाने में ही समझदारी है ।डॉ शशि जैन ने नेत्रों पर दुष्प्रभावों की एक फेहरिस्त बना दी है जो शायद चिकित्सा विज्ञान के छात्रों के लिये उपयोगी हो ।उसमें हम मधुमेहियों के लिये कोई दिशा–निर्देश नहीं दिये गये हैं। राधिका श्रीवास्तव अमिता सिंह एवं अलका दुबे के लेख भी काफी शिक्षाप्रद है ।

दीपांकर जोशी
अरेरा कालोनी, भोपाल

❖ ❖ ❖

आदरणीय संपादक जी,

मधुमेह वाणी के द्वारा जो ज्ञानवर्धक जानकारी आप जन–जन तक पहुँचा रहे हैं वह एक सराहनीय कदम है। हर अंक नवीनता लिये रहता है तथा हर लेख की प्रस्तुति अनूठी रहती है। मै तो चाहता हूँ कि हर मधुमेही इसके सारे अंक आवश्यक रूप से पढ़े या पढ़वाये ताकि उसकी सजकता बढ़े और नीम हकीम और मन गढंत इलाज का प्रचार करने वालो के हौसले पस्त किये जा सकें ।

सिद्धांत कपूर
अलवर

❖ ❖ ❖

''**मधुमेह वाणी**'' नामक पत्रिका निकालने पर हम सभी बाल मधुमेहियों की ओर से आपको धन्यवाद देते हैं ।

गौरव शुक्ला
आगरा

संपादक महोदय,

एक श्रेष्ठ पत्रिका निकालने के लिये मेरी बधाई स्वीकार करें। अब समझ में आता है कि मधुमेह कोई सर्दी जुकाम जैसा आम रोग नहीं है । इसमें आप चिकित्सकों को बहुत से पहलुओं पर विचार कर के इजाल निर्धारित करना होता है । नकली डाक्टरों को भी यह बात समझ लेना चाहिए कि सोई कौम को चाहे जितना छेड़ लें मधुमेह वाणी पढ़ने के बाद अब जन साधारण जागृत होता जा रहा है और इन नकली डाक्टरों की ढोल की पोल स्पष्ट होती जा रही है । समझदारी यही होगी कि वे इस विधा से दूर रहकर मधुमेह रोगियों पर कृपा करें ।

आपकी

सुलक्षणा पाठक

बीकानेर ॖराजस्थानॆ

❖ ❖ ❖

संपादक महोदय,

मधुमेह वाणी इतनी लोकप्रिय और बहुचर्चित हो चुकी है कि वह अब किसी प्रचार को मोहताज नहीं । ऐसे अनूठे प्रयास के लिये आपको बधाई ।

एस.के. चर्टजी

भारतीय स्टेट बैंक

भोपाल

❖ ❖ ❖

संपादक महोदय,

पत्रिका जगत में माह नबम्वर 2004 से प्रारम्भ मधुमेह वाणी पत्रिका का प्रथम अंक से लेकर नवीन अंक मई–जून 2005 को भी हमने पढ़ा तो पाया कि इतनी गहन अध्यन और वैज्ञानिक खोज का लाभ प्रत्येक अंक में इमानदारी से प्रस्तुत करके आपने मधुमेह के रोगियों को इस बीमारी की सम्पूर्ण जानकारी देकर उन्हें लाभ पहुचाया और नीम हकीमों के गलत इलाजों से अवगत कराकर उनके अनमोल जीवन की भी रक्षा कर रहे हैं। इसके लियें हमारी पत्रिका आपको शुभकामना देती है ।

हमें आपके नवीन अंक का इंतजार है। कृपया अपनी कोशिश और प्रयासों को और तेज करें ।

धन्यवाद

श्रीमती मालती बिल्थरे

सम्पादक

'बैमलन',सागर

❖ ❖ ❖

प्रिय संपादक महोदय,

''मधुमेह वाणी'' का मई–जून 2005 वाला अंक प्राप्त हुआ। अच्छा बना है। ''सम्पादकीय'' तो बहुत ही अच्छा है। ''छिपकली से मधुमेह का इलाज'' क्रमवार लिखा गया है और पाठक कों बाँधे रखता है। विभिन्न प्रकार के चावल एवं मधमुेह उन रोगियों के लिए अच्छा है जो चावल खाते हैं। ''इन्सुलिन एक महान खोज'' ने याद दिलाया कि 14 नवम्बर केवल बाल दिवस नहीं मधुमेह दिवस भी है।

एक सलाह यह है कि यदि इन्सुलिन की खोज की कहानी को लघु नाटक के रूप में छापा जाए तो बच्चा के लिए उपयोगी होगी। एक अच्छे और सफल प्रयास के लिए आपको व सम्पादकीय मण्डल को बधाई।

शुभकामनाएँ!

डॉ. एन.एन. लाहा

डॉ. पी.एन. लाहा मार्ग, ग्वालियर